श्री संत तुकाराम शिक्षण प्रसारक मंडल
कला, वाणिज्य व बीबीए महाविद्यालय, वडगांव मावल

भारतीय काव्यशास्त्र

S.Y.B.A (S 1) -- New Syllabus

T.Y.B.A (S4) -- 2013 Pattern

डॉ. शीतल दुर्गाडे
(सहायक प्राध्यापक,हिंदी विभाग)

काव्य का स्वरुप

- काव्य का स्वरुप काफी व्यापक है |
- प्राचीन संपूर्ण साहित्य काव्यबद्ध था |

काव्य की परिभाषाएँ –

- **संस्कृत परिभाषाएँ**
- **१.भामह – (काव्यालंकार)**

शब्दार्थो सहितों काव्यम्

अर्थात शब्द और अर्थ से युक्त रचना को काव्य कहा जाता है |

- **२.आचार्य विश्वनाथ –(साहित्य दर्पण)**
- **“ वाक्यं रसात्मक काव्यम् ”**

  अर्थात रसयुक्त वाक्य को काव्य कहते है |

- **३. पंडितराज जगन्नाथ –**
- **“ रमणीयार्थ प्रतिपादक : शब्द : काव्यम् ”**
- **रमणीयार्थ – आतंरिक आनंद**

  अर्थात जिस शब्द या वाक्य से रमणीय अर्थ प्राप्त हों वही काव्य है |

- हिंदी की परिभाषाएँ

१. सुमित्रानंदन पंत

" कविता हमारे परिपूर्ण क्षणों की वाणी है |"

२.आचार्य रामचंद्र शुक्ल –

" कविता जीवन और जगत की अभिव्यक्ति है|"

३. महादेवी वर्मा –

"कविता कवी की विशेष भावनाओं का चित्रण है|"

- **अंग्रेजी की परिभाषाएँ**

१. मैथ्यू आर्नल्ड –

“ Poetry is at bottom a critiism of life”

अर्थात – कविता अपने मूल रूप में जीवन की आलोचना है **|**

२. वर्ड्सवर्थ –

“Poetry is the spontanious overflow of powerful fellings. It takes its origin from emotions in transquality”

अर्थात – शांति के समय में स्मरण किये गए अचल मनोवेगों का स्वछंद प्रवाह ही काव्य है **|**